परमवीर

परमवीर

[परमवीर चक्र प्राप्त मेजर शैतानसिंह के प्रति श्रद्धांजलि]

नारायण सिंह भाटी



प्रकाशक
कलावतार पुस्तक मन्दिर
रातानाडा जोधपुर

हिन्दी अनुवादकर्ता
सौभाग्यसिंह शेखावत

प्रथम संस्करण अप्रैल, १९६३

मूल्य अढ़ाई रुपये

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
साधना प्रेस
जोधपुर

समर्पण

भारतीय सेना के उन वीर सिपाहियों

को

जिन्होंने देश की सुरक्षा

के लिए

अपना जीवन बलिदान कर दिया ।

—लेखक

आभार प्रदर्शन

इस पुस्तक में प्रकाशित चार दुर्लभ चित्र श्री रामचंद्र रा० मेजर [illegible]जी के [illegible] [illegible]जी के सौजन्य से प्राप्त हुए [illegible] धन्यवाद।

क्रम

आभार प्रदर्शन

इस पुस्तक में प्रकाशित पत्र एवं चित्र आदि सामग्री स्व० मेजर केसरीसिंहजी के सुपौत्र श्री मुकुटसिंहजी के सौजन्य से प्राप्त हुई एतदर्थ धन्यवाद।

क्रम :

पहली बात

सर्दी का मौसम सन्ध्या के समय में घूमता घामता एक पान की दुकान पर भीड़ देख कर रुक गया। वहाँ खड़े सभी लोग बड़े ध्यान स खबरें सुन रहे थे। चीनियों के बर्बर आक्रमण के प्रति रोष की भावना उनके चेहरों पर स्पष्ट थी। एकाएक रेडियो की तरफ मैंने गंभीरता से ध्यान दिया तो सुनने में आया "चीनी आक्रमणकारियों ने लद्दाख क्षेत्र के चुशूल हवाई अड्डे के निकट बड़ा भारी आक्रमण कर दिया है। भारतीय सेना की एक पूरी कम्पनी ने बहादुरी से उनका सामना किया और सैंकड़ों आक्रान्ता चीनियों को मौत के घाट उतार दिया। उन्होंने चीनियों के कितने ही हमले विफल कर दिये और अन्त में सारा काम आ गई। उनका सेनानायक (कमाण्डर) भी लड़ते-लड़ते बुरी तरह घायल हो गया। पूरी सेना में घायल कमाण्डर और दो सैनिक बचे। तब दोनों सैनिकों ने उसे उठा कर सुरक्षित स्थान पर ले जाने का विचार व्यक्त किया। दुश्मनों की गोलियाँ अभी तक बरस रही थीं ऐसी स्थिति में कमाण्डर ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि वे उसकी पर वाह न करें। उसे वहीं छोड़ दें और तत्काल पीछे की चौकी पर सूचना दें कि शत्रु बढ़ता आ रहा है, वे सावधान हो जाय। चुशूल के हवाई अड्डे को बचाना है। यह समाचार सुनते ही मेरे रोम-रोम में रोमांच हो गया और मैंने मन ही मन कहा—संसार में इन्सान की बहादुरी और त्याग की सीमा नहीं है। इतनी ऊँची जगह पर बुरी तरह घायल

होने पर भी सेनानायक अपने जीवन का खयाल न कर अपने कर्तव्य का ख्याल करता है। वास्तव में भारत के इतिहास में वीरता की जो प्राचीन गाथाएँ हमने सुनी या पढ़ी थीं उसका प्रत्यक्ष प्रमाण आज के युग में भी मिलता है।

मैं उस स्थान से घर की ओर चल दिया। पर कमाण्डर के ये शब्द 'मुझे यहाँ छोड़ दो मेरी परवाह मत करो।' मेरे दिमाग में गूंजते रहे। मैं तरह-तरह की कल्पनाएँ करने लगा। १८ हजार फुट की ऊँचाई पर क्या होगा। कैसे पहाड़ होंगे कितनी बर्फ होगी कैसे मोर्चे खोदे गए होंगे किस तरह इतनी शीत में सिपाहियों ने दुश्मन का मुका बिला किया होगा? कम्पनी के कमाण्डर का क्या हुआ होगा? अजीब तरह की कल्पनाएँ संशय एवं रोमांच मुझे एक साथ घेर लेते जब भी मुझे इस घटना का स्मरण हो आता।

इस घटना के बाद तो युद्ध-विराम के समाचार भी रेडियो पर सुनने को मिले, पर मेरी कल्पना को कभी विराम नहीं मिला। जब भी मुझे एकान्त मिलता शून्य में फैली हुई विशाल हिमालय की घाटियों में होने वाले युद्ध के चित्र मेरी कल्पना में उतर आते।

एक दिन मैं अपने कमरे में बैठा एम. ए. के एक विद्यार्थी को बीर सतसई के कुछ दोहे समझा रहा था। उनमें एक दोहा था—

सेजा नैनन पर सजी अपनी अजब अदाज।
ताप में राखौं अजर, सो कुछ अंत समान॥

मैं इस दोहे का अर्थ समझा ही रहा था कि इतने में मेरे पड़ोसी उदयसिंह कमरे में आ गये। उन्होंने प्रवेश करते ही कहा—क्या आप सब दिन किताबों से ही माथा लगाते रहते हैं। खबरें सुनने का समय हो गया है और आपका रेडियो बन्द पड़ा है। मैंने दोहे का अर्थ पूरा करने के लोभ से हाथ से रेडियो की ओर संकेत किया कि मैं रेडियो

चालू कर दें। रेडियो चालू करते ही खबरें प्रारंभ हुईं। मैंने विद्यार्थी को विदा कर अपनी कुर्सी मेज के करीब खींचली और सिगरेट जला कर ध्यान से खबरें सुनने लगा। इतने में सुनाई दिया—कुमायूं रेजिमेण्ट के मेजर शैतानसिंह ने लद्दाख क्षेत्र के चुशूल हवाई अड्डे की रक्षा के लिए लड़ते हुए असाधारण वीरता दिखाई, जिसके उपलक्ष में राष्ट्रपति ने भारतीय सेना के सर्वोच्च सम्मान का सूचक पदक 'परमवीर चक्र' प्रदान किया है। और मेरी कमाण्डर वाली कल्पना में मेजर शैतानसिंह की आकृति उभर कर सामने आ गई। श्रद्धा और प्रेम से मेरा हृदय गद् गद् हो गया। दूसरे ही क्षण सुनने को मिला कि वे युद्ध क्षेत्र में बुरी तरह घायल हो गये थे और अभी तक लापता हैं। अपने हाथ की जलती हुई सिगरेट को भूल कर मैं फिर कल्पना में डूब गया क्या हुआ होगा शैतानजी का ? क्या उन्हें वीरगति प्राप्त हो गई या दुश्मन घायल अवस्था में उठा कर ले गये ? इस विस्मय की दुखद स्थिति में कई दिन और निकल गये। कई लोगों से मैं पूछता भी रहता शायद कोई खबर कहीं से मिल जाय। उनके भाई और रिश्तेदार भी मेरे परिचित हैं। उनसे भी मैंने कई बार पूछा पर उत्तर निराशाजनक ही मिलते रहे। कई दिनों की असमंजसभरी स्थिति के बाद समाचार मिले कि उन्हें जिस स्थान पर छोड़ा गया था उसी स्थान पर उनका शव भारतीय सेना की एक टुकड़ी ने खोज निकाला है। न मालूम क्यों यह मैं आज भी नहीं समझ सका—न मुझे हर्ष हुआ और न दुःख। उस समय प्रसन्नता अवश्य हुई जब पता लगा कि उनका शव वहां से जोधपुर लाया जायेगा और पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ दाह-संस्कार होगा।

इन सब घटनाओं की सूचनाओं के साथ जो कल्पनाएं व भावोद्वेग समय-समय पर होते रहे, वे देश के लिए बलिदान हो जाने वाले एक योद्धा के प्रति भावमयी श्रद्धांजलि के रूप में मेरे मानस में संगृहीत हो गए। उसमें शैतानसिंहजी के साथ मेरा वर्षों का संसर्ग और उनकी

व्यक्तिगत विशेषताएँ अपना विशेष रंग बोलने में समर्थ हुईं और एक-एक उस परमवीर के बलिदान ने मुझे मातृभूमि के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उन्हें माध्यम चुनने के लिए बाध्य कर दिया। यह काव्य ही मेरी श्रद्धाञ्जलि है और यह श्रद्धाञ्जलि ही मेरा काव्य है।

भारत के उस सपूत परमवीर शैतानसिंह की जीवन सम्बन्धी कुछ बातें जानने का आग्रह भी मैं पाठकों से करता था। श्री शैतानसिंह का जन्म जोधपुर जिले की फलौदी तहसील के बाणासर ग्राम में १ दिस० सन् १९२४ में हुआ था। उनके पिता श्री हेमसिंहजी जोधपुर रिसाले में अफसर थे। पहिले विश्व युद्ध में उन्होंने बड़ी बहादुरी दिखाई थी और फ्रान्स में घायल भी हुए थे। उन्हें इस प्रकार की वीरता और श्रेष्ठ सेवाओं के लिए ओ० बी० आई० आदि सम्मानसूचक पदवी ब्रिटिश सरकार से मिली थी और युद्ध के बाद धीरे-धीरे वे लेफ्टीनेन्ट कर्नल के पद पर पहुँच कर रिटायर हुए। इस प्रकार श्री शैतानसिंह को यह उच्च कोटि के संस्कार की परम्परा अपने पिता से मिली।

श्री शैतानसिंह को मैट्रिक तक की शिक्षा राजपूत हाई स्कूल चौपासनी में मिली थी। उस समय मि० ऐ० पी० कोल्स उसके प्रिन्सिपल थे। चौपासनी स्कूल अनुशासन एवं खेल-कूद के लिए प्रारंभ से ही प्रसिद्ध रहा है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि प्रथम विश्व युद्ध में वीरता के लिए सबसे बड़ा सम्मानसूचक विक्टोरिया क्रॉस इसी स्कूल के विद्यार्थी श्री गोविन्दसिंहजी को मिला था। इस स्कूल ने भारतीय सेना को अनेक सिपाही और सैनिक अफसर समय-समय पर दिये हैं। श्री शैतानसिंह जिस प्रताप हाउस (बोहिम भवन) में रहा करते थे उसी हाउस में रहने के कारण उनके निरन्तर सम्पर्क में आने का मुझे बराबर सौभाग्य मिलता रहा था। वर्षों तक हम साथ रहे। उनका सभी विद्यार्थी बड़ा सम्मान करते थे। वे बहुत कम बोलते थे और

सादगी उनकी मुख्य पसंद थी। क्रोध में आना तो वे कभी जानते ही नहीं थे। उनका जीवन वास्तव में बड़ा निश्छल और निर्मल था। चौपासनी स्कूल का बच्चा-बच्चा ही नहीं अपितु जोधपुर के अधिकांश विद्यार्थी उन्हें फुटबाल के असाधारण खिलाड़ी के नाते भली प्रकार जानते थे। वे इतने सरल स्वभाव के थे कि लोग-बाग उनसे मजाक करने में भी हिचकिचाते थे। हमारे एक अध्यापक ऐसे अवश्य थे जो उन्हें इतना शान्त देख कर कभी-कभी मजाक के तौर पर कहा करते थे—यह बहुत सीधा लड़का है पर कभी बहुत बड़ी शैतानी करेगा। शायद उनके ये शब्द चरितार्थ होने के लिए १८ नवम्बर ६२ के युद्ध की प्रतीक्षा कर रहे थे।

सन् १९४३ में उन्होंने हाई स्कूल पास कर जसवंत कॉलेज में प्रवेश लिया। फिर भी उनके आचरण और स्वभाव में कोई अन्तर न आया। फुटबाल के असाधारण खिलाड़ी के नाते पूरे कॉलेज में वे सम्मानित थे। सन् १९४७ में बी० ए० पास करते ही कर्नल मोहनसिंहजी ने उन्हें दुर्गा हॉर्स में कैडेट के पद पर ले लिया। कर्नल साहब उनके व्यक्तित्व और अनुशासनप्रियता पर बड़े प्रसन्न थे। रियासतों के विलय के बाद वे भारतीय सेना में आ गये और निरन्तर लगन तथा दक्षता के कारण सन् ५५ में कैप्टिन के पद पर पहुँच गये। उनकी सेवाओं से उनके अफसर सदैव प्रसन्न थे। नागा हिल्स तथा गोआ एक्शन में भी उन्होंने बहुत अच्छा कार्य किया था। सन् ६२ के जून महीने में ही उन्हें मेजर का पद मिला था। लद्दाख क्षेत्र में चीनियों के आक्रमण का मुकाबिला करने के लिए कुमायूं रेजीमेण्ट के मेजर के नाते वे वहां तैनात थे। करीब १८ हजार की ऊँचाई पर चुशूल से १२ मील पूर्व दक्षिण की ओर उनकी सेना ने मोर्चे लगा रखे थे। १८ नवम्बर की सुबह से लेकर शाम पड़ने तक इनकी कम्पनी ने दुश्मन के कितने ही हमले विफल किये और सैकड़ों को धराशायी किया। बहादुर

सेना के बहादुर सेनापति ने पीछे न हटने का दृढ़ निश्चय कर सेना को प्रेरित किया और स्वयं लड़ता हुआ घायल होकर गिर पड़ा तथा अन्त में वहीं वीरगति को प्राप्त हुआ।

जैसा उस व्यक्ति का चरित्र था उसी के अनुरूप संकल्प किया और जैसा संकल्प था उसी के अनुसार कर्तव्य कर दिखाया।

१८ फरवरी को विशेष विमान द्वारा उनका शव जोधपुर के हवाई अड्डे से कर्नल मोहनसिंहजी के बंगले पर लाया गया। वहां उनका परिवार और राजघराने के लोग उपस्थित थे। धार्मिक संस्कारों के पश्चात् शव सर्किट हाउस में लाया गया और वहां से सभी मण्ड विभागों और प्रतिष्ठित नागरिकों एवं सम्पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ जुलूस के रूप में सोजती गेट और कचहरी आदि स्थानों एवं मार्गों से होता हुआ कागा श्मशान स्थल पर ले जाया गया।

वहां राष्ट्रपति की ओर से मेजर जनरल भगवतीसिंहजी ने पुष्पहार चढ़ा कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री मोहन लाल सुखाड़िया ने मंत्री-मण्डल के सदस्य मंत्रियों सहित सम्मान प्रदर्शित करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। कर्नल मोहनसिंहजी भाटी व जोधपुर राजघराने के माननीय सदस्यों ने श्रद्धा के सुमन मृत वीर के शव पर चढ़ाये। जनता की अपार भीड़ के बीच इस युग के महान् वीर का दाह संस्कार सम्पन्न हुआ।

इधर सूर्य अस्त होने को आया। अंतरिक्ष की पलकें भारी हो रही थी और उधर श्मशान के अंगारे शान्त हो रहे थे। मेरी कल्पना शब्दों की मंजिल पर उतर आने को आतुर हो रही थी।

—नारायण सिंह भाटी

राजस्थानी शोध संस्थान
रिसाला रोड
जोधपुर — २५ अप्रैल, १९६३

परमवीर



मेजर शैतानसिंह



सिरजण वाळे सिरजिया,
अणगिण बिरछां बेल।
वां बिरछो घिन छांहड़ी,
फळै अमरफळ बेल।

देव और दानवों की युद्ध-परम्पराओं की अनेक अमिट रेखायें पुराणों में अंकित हैं। आज फिर प्रकृति उसी प्रकार के संघर्ष के लिए तत्पर प्रतीत होती है।

यहाँ लड़े गये घमासान युद्धों से अनेक बार शेषनाग के मस्तक नमे हैं। पर अबकी बार तो कैलाश पर्वत के मस्तक के नम जाने का भी अपेक्षा है।

कपटी शत्रु ने 'हिन्दी चीनी भाई-भाई' के बोल बोल कर मित्रता का दिखावा किया और फिर मौका देख कर घात कर बैठा। यों उस छद्म-मित्र वैरी ने कैलाश गिरि की पवित्रता पर दाग लगा कर मित्रता में विष घोल दिया।

देवासुर संग्राम रो,
पढ़ी पुराणा लीक।
पसवाड़ो फेरै प्रकत,
पाछी आज उडीक।

घमसाणां घमसाण में,
सीस झुकीज सेस।
अबकाळे घमसाण में,
हरगिर झुकण अंदेस।

वण भाई भेळप करी,
दगो कियो सस दाव।
पिसण पुळे हरगिर हिये,
कीन्हो कपटी घाव।

चीन के युद्ध-अभियान प्रारंभ करते ही दोनों सेनाओं में हलचल मच गई और युद्ध-मोर्चों के खोले जाने के साथ ही शान्ति के दूत कपोत उसमें दफना दिये गये।

दोनों ओर की तोपों से आग की लपटें लपकने लगीं और दोनों पक्षों के बीच भारी शत्रुता छा गई। खंदक-खंदक में कर्तव्य रत वीर सैनिकों के शस्त्रों से चिनगारियाँ कौंधने लगीं।

देश के कण-कण में युद्ध का वातावरण छा गया। हर मानव के चेहरे पर क्रोध की लहरें हिलोरें मारने लगीं। और देश प्रेम में मतवाली सेनाएँ मातृभूमि की रक्षा के लिए दूने जोश से भिड़ गईं।

धाळौ चीन चितामियो,
हूळचळ मणियां होत।
गळिया भुवतां मोरचा,
सांयत दूत कपोत।

मारावो भड़तां भगन,
दुहु पख पड़ियौ ताव।
खंदक खदक हूळफळै,
भावघ खिव सिळाव।

देस पूर सहरां उठो,
चहर पैहरै रोस।
भ्रजकी वतन उचारणी,
फौजां दूणै जोस।

टिड्डी दल के समान असंख्य चीनी-वाहिनी ने जब चुशूल पर आक्रमण किया तब कुमायूं रेजिमेन्ट का मोर्ची मेजर शैतान सिंह गजराज की भाँति सामने पैर रोप कर शत्रु-सेना से भिड़ गया।

विपत्ति के बादलों ने उमड़ कर गोलियों की बौछारें प्रारम्भ कर दी। कैलाश का दुर्ग उन भयंकर प्रहारों से कम्पित हो गया और महान् हिमगिरि में भी इस भयंकर आक्रमण से दरार पड़ने की स्थिति पैदा हो गई।

युद्ध की उस मरणात्मक घड़ी में शैतान सिंह ने अपने वीर साथियों को ललकार कर उत्साहित किया। इस प्रकार उस महा वीर ने प्रवहमान प्रलय में दृढ़ता से अपने पर रोप दिये।

चीनी कियौ चुसूळ गळ,
टीडी दळ ज्यू जग।
हदे कमायू फौज रौ,
मांझी हुयौ मतग।

झापत जळधर ऊमड़ै,
गोळी ज्यू बौछार।
गढ़ धूज कैळास रौ,
हिमगिर तिड़कण-हार।

सिण वेळा लसकारिया,
सैताने निज सूर।
घहती परळै वीप में,
पग रोपे भरपूर।

जब शत्रुवाहिनी के गोलों की भयंकर मार से अविचल गिरिराज भी विचलित हो उठा तब उस मितभाषी सैतानसिंह ने अपने वीर कर्तव्य का स्मरण किया और अपने हृदय में धैर्य धारण कर दृढ़ता से शत्रु के सम्मुख डट गया।

उस वीर ने भारत शत्रु असंख्य चीनियों को मौत के घाट उतारा व अन्य दुश्मनों के हृदयों को विचलित कर दिया। अन्त में उसकी पूरी सेना वीरता के साथ लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई तथा वह स्वयं घावों से लहू-लुहान होकर धराशायी हो गया।

विपत्ति की उस भयानक वेला में साथियों ने अपने प्रिय नायक को शिविर में ले जाने के लिये उठाया। ऐसे विकट क्षणों में उस नायक की बुद्धि ने तो एक बार वहाँ से हट जाने का इरादा किया पर उसी क्षण किसी भी कीमत पर न हटने का आग्रह हृदय कर बैठा।

मितभासी करतब करण,
धरण हिये दृढ़ धीर।
परम वीर पग रोपिया,
हिमगिर हुवां अधीर।

अणगिण चीनी भूंजिया,
पिसणां खळबळ जीह।
सेन गई गत बीर री,
धावो पड़ियो सीह।

प्रांण उठायो साथियां,
अवखी वेळा मांय।
अकल कहै हट जावणो,
हियो कहै हट नांय।

इस प्रकार बुद्धि और हृदय के बीच कुछ क्षणों तक उस वीर के हृदय में संघर्ष रहा पर अन्त में अपने हृदय को हथेली पर रख कर लड़ने वाले वीर ने न झुकने का ही निश्चय किया।

रणांगण में अरि-समूह को ललकार कर वह दुगुने जोश से लड़ा और जन्मभूमि की रक्षा के लिए जीवन के अन्तिम क्षणों में भी उसका वह नश्वर शरीर कमल के समान विकसित हुआ।

जब उसके शरीर से रक्त बह कर हिम रेखा में प्रविष्ट होने लगा तो शैथिल्य के कारण पलकें तो अवश्य झुक गईं। पर उसने वतन के ध्वज को नीचे नहीं झुकने दिया और उन अन्तिम क्षणों में भी उसके शरीर में जोश की लहरें उठ रही थीं।

अकल हिये रा ऊरवा,
सघरसै मन माय।
हियो हथेळी राखणो,
आखिर हटियो नांय।

लखियो दूणे जोस सूं,
आफळियो अगराज।
पल पल पोयण फूल ज्यूं,
अग विकस्यो धर काज।

रगत बह्यौ हिमरेख में,
पलक झुकी उण पांण।
पण धज नह झुकियो धरा,
उससै अप आपांण।

हे ध्वजधारी वीर शैतानसिंह ! तुमने राष्ट्रध्वज की मर्यादा की रक्षा कर अपने सच्चे ध्वजधारीपने को चरितार्थ किया । तुम्हारी कीर्ति की पताका अनन्त काल तक आसमान में लहराती रहेगी और सदा-सदा के लिए वीरों को अपनी ओर आकर्षित करती रहेगी ।

रणस्थल में मर जाना पर मरण-भय से रणविमुख न होना यह क्षत्रियों की अनादि परम्परा रही है । हे हेमसिंह के पुत्र ! तुमने रण में प्राण-विसर्जन कर उस आन परम्परा का खूब निर्वाह किया ।

हमने बाँकुरे रण वीरों की मरण-हठ की अनेक गौरव गाथाएँ सुनी और पढ़ी थी पर हे वीर ! प्रत्यक्ष में तो तुम्हारी ही वीर मृत्यु से वीरों के गौरवमय बलिदान का आभास कर पाये हैं । वास्तव में ऐसे वीरों का मरण धन्य है ।

घज रासण घजवीर थू,
घज-बघी सैतान।
सो घज सघा सुहावसो,
कीरत रै असमांन।

मरणो पण हटणो नहीं,
आ रण खेतां रीत।
भली निभाई हेम रा,
रजवट हुदी रीत।

सुणिया भर भणिया घणा,
सांका सळहट सोर।
परतख म्हे गुणिया हुमें,
रग रजवट रण घोर।

हे वीरवर ! जिस हिमगिरि का शिर आकाश को स्पर्श किये रहता है, तू ने उसी गिरिराज हिमालय पर जाकर शत्रुओं से लोहा लिया । पृथ्वी के अन्य वीरों के मस्तक तो आकाश को छू पाये हैं मगर तुम्हारे मस्तक ने तो स्वर्ग को जा छुआ है ।

जिस प्रकार आकाश में बिजली और धरती में बीज सदैव संचित रहते हैं, उसी तरह वीर पुरुषों में पौरुष सदैव विद्यमान रहता है और वह समय आने पर ही अपने पूर्ण रूप में प्रकट होता है ।

गीता के उपदेशानुसार अर्जुन ने कर्तव्य रत होकर महाभारत का युद्ध जीता पर उसके बाद कर्तव्य भुला कर उसने धरम काम किये और हिमालय पर विचित्र अवस्था में गलने के लिये पहुँचा ।

जिण गिर रौ सिर आभ लग,
तिण पर लडियो जाय।
और भर्खौ सिर आभ लग,
सो सिर सरग छुवाय।

आभ तजै ना बीजळी,
धरणी तजै न बीज।
पौरस पुरसां कमळै,
जद वेळा वरतीज।

गत गीता उपदेस हित
अरजण जुध में जीत।
धांम तज्यौ ससतर तज्या,
आयौ जठ सचींत।

परन्तु उसी हिमालय पर तू जन्म ग्रहण कर मातृभूमि की रक्षा के लिये कर्मरत हुआ। अमर गीता के असली त्याग का इससे बड़ा प्रमाण कौनसा हो सकता है।

जिस हिमालय की गोद में पार्वती ने बाल क्रीड़ायें की उसी हिमालय की गोद में हेमसिंह के पुत्र ने चातुर्यपूर्ण रण केलियां कीं।

एक ही गोद में क्रीड़ा करने के कारण हिमालय की पुत्री चंडी ने उसे भाई के समान माना और तभी उस शिवजी की पत्नी ने तेरे जूझ कर मरने के पश्चात् भी तेरा सिर अपना खप्पर बनाने के लिये नहीं लिया।

उण जागा ससतर लियां,
लड़ियो यूं सतांन।
गीता वाळ ग्यान री,
ओर किसो परमाण।

हेम सुता जिण खोळ में,
बाळपण की केळ।
तिण जागा सुत हेम की,
समर समांणी केळ।

अेक खोळ रमियां पछ,
पंथी जांण्यो भ्रात।
तिण कारण जूंझार री,
सिव-धण लियो न साथ।

हे शैतानसिंह ! संसार भले ही तेरे चरित्र से परिचित न हो पर मैं तो तुझे भली प्रकार से जानता हूँ। प्राण न रहने पर भी तेरी देह को कर्म नहीं गला सका वास्तव में तू युधिष्ठर के समान था।

हे वीर ! जब तुम्हारे प्राण-पंखेरू उड़े तो तुम्हारी विशेषताएँ भी उनसे साम्य रखने वाली वस्तुओं में जा मिलीं। तेरा तेजपुंज सूर्य को मिला तेरी पावन आत्मा की अमरता अपने सजातीय चन्द्रमा को मिली व ध्रुव तारे को तेरे मन की ध्रुवता मिली और तेरे हृदय की पवित्रता आकाश-गंगा को मिली।

हिमालय पर देश रक्षा के लिये तुम्हारा रक्त बहा। वहां से बहने वाली नदियाँ उस रक्त को भारत भूमि पर चारों ओर फैला देंगी। उस रक्त के अंश से युक्त जल से खेतों की फसलें जब तक लहलहाती रहेंगी तब तक तेरा नाम इस संसार से नहीं मिटेगा।

अगत भला मत जाणओ ,
हू आंणू सेतांन ।
प्रांण गयां मन न गळयौ ,
जुधिठर सो सतवांन ।

सूरज मिळियौ तेज सूं ,
ससिकर बस सुधग ।
धू मिळियौ धू सू अडिग ,
पावनता नभ-गग ।

रगत बह्यौ हिम ऊपरां ,
नदियां घर ले जाय ।
जद लग लहरे सेतडा ,
थारो नांम न जाय ।

जो भी फूल खिलेंगे फसलें पकेंगी उनके कण-कण पर तुम्हारा नाम अंकित होगा। हे शैतानसिंह! तुम्हारे रुधिर से पोषित फूल-फूल की पंखुड़ियों में तुम्हारे बलिदान की सौरभ सदैव महकती रहेगी।

यज्ञों को निर्विघ्न पूर्ण करवाने के लिए हमने दैत्यों के साथ लड़ कर अपने सिर दिये हैं और ऋषियों का कुल निभाया है फिर भला वीर योद्धाओं के रहते हुए ऋषियों का पवित्र गृह हिमालय शत्रुओं द्वारा कैसे जीता जा सकता है।

हे धवल (निर्मल) हृदय के धारण करने वाले! तू वस्तुतः धवल (बैल) के समान ही प्रचण्ड था तभी तो तूने धवलगिरि के शिखर पर चढ़ कर रण-घोष किया जिससे शत्रु-दल छिन्न विच्छिन्न हो गया।

फूल खिलै फसलां पके,
कण कण थारो नांम।
फूल फूल री पांखड़ी,
सुजस थूं सैतांन।

पूरण जिग सिर सौंपिया,
राखण रिखिया नेम।
मड ऊभां रिख गेहड़ो,
भिळ धवळ गिर केम।

धवळ हिय रा धारणा,
धवळ जिसो प्रचंड।
धवळ गिर चढ़ तिहियो,
अरि-दळ खंड विहंड।

रण में असाधारण धैर्य के साथ लड़ने वाले रण-वीरों ने समुद्र और पृथ्वी पर अनेकों युद्ध किए हैं पर तू तो युद्ध के लिये उस जगह पहुँचा जहाँ आकाश में उड़ने वाले थोड़े ही पहुँच सकते हैं।

ऐसे अगम्य स्थान पर पहले तो पहुँचना ही कठिन है और फिर वहाँ हवा (ऑक्सीजन) की कमी के कारण सांस तक लेने में कठिनाई होती है। ऐसी जगह पचासा रण युद्ध कर के तैने शत्रु-दलों को पराजित किया है।

हे वीर! जिस दिन की संध्या को तेरी आँखों की अंतिम ज्योति सूर्य में समाहित हो गई उसी संध्या को तेरे स्नेह के सिंचित दीप पूरे देश में जगमगा उठे।

रणधीरा रणवीर के,
जळ थळ कीधा जग।
यूं लडियो पहुंचे जठे,
उडणा मन खग।

परथम दुरलभ पूगणो,
पछ ज लेणो सांस।
उण जागा दुसमण दळां,
भूलाई वें सांस।

तो नैणां री जोतसी,
जिण दिन मरक मिळीह।
नेह भरीज्या दीवटा,
घर घर जोत जळीह।

अन्य दीपक तो तेल समाप्त होने पर या पवन के झोंके मात्र से बुझ जायेंगे पर तैने देश प्रेम का जो मणि-दीप दीप्तिमान किया है वह युगों युगों तक काल के झकोरों से भी नहीं बुझेगा।

आज राम लक्ष्मण भरत और सीता भी सशरीर नहीं रहे पर उन्होंने असुरा को पराजित किया था—उसकी यादगार दिपावली के रूप में सदैव विद्यमान है।

करोड़ दिवाली राज करें की परम्परा केवल आशिष् के रूप में ही संसार में प्रचलित रही है पर हे वीर! तैने तो मात्र आशीर्वाद की परम्परा को इस कलयुग में काल जैसे विकट अरि को जीत कर सत्य सिद्ध कर दिया है, अतः तू वास्तव में अनगिनत वर्षों तक यहाँ की जनता की स्मृति पर राज्य करता रहेगा।

ग्रोर दिया मुझ जावसी,
झोलै नेह गर्याह।
देस नेह मणि-दीप ग्रो,
बुझै न झपट जुगांह।

राम गया लिछमण गया,
भरत सिया सह लोप।
ग्रसुरां पर सुर-ग्रोत री,
जगै दिवाळी ओत।

न्रोह दिवाळ्यां राज री,
कोरी ग्रासिस रीत।
कळजुग मे सांची करी,
काळ जिसो ग्ररि जीत।

इस पृथ्वी पर नित्य प्रति कई लोग जन्म लेते हैं और कई मरते हैं, युगों युगों का यही क्रम है पर जो लोग देश-रक्षा के लिये जूझ कर काम आ गये वे लोग मर कर भी अमर हैं।

'जीवन एक कला है' इसे सभी बुद्धिमान व्यक्ति मानते हैं परन्तु 'मरना भी एक कला है' इसका सच्चा पारखी तो हे पीरूसिंह ! तू ही था।

हे पीरूसिंह की पत्नी ! तू अपने मन में यह विचार मत लाना कि तेरा पति इस संसार-सागर की मझधार में ही तुझे छोड़ कर चला गया। उसने तो समस्त देश की आजादी की डगमगाती हुई नाव की पतवार सम्भाली है।

के जलमै के मर खप,
घारा घर जूनाह।
जे जूझ्या हित देस रै,
मरियां अमर हुवाह।

कळा जगत मे जीवणो,
मानै सह गुणवांन।
मरण कळा रौ पारखी,
यू मोटौ सैतान।

धण मत धोखौ आंणजे,
पिव छोडी मझधार।
आजादी री नाव री,
पत झाली पतवार।

तेरे शरीर पर शोभायमान होने वाले सुहागसूचक शृङ्गार आज उतर गये हैं तू इसका अफसोस मत करना तेरे पति ने देश रक्षा के लिये वीर गति प्राप्त कर अपार यश अर्जित कर के समस्त देश को शृंगारित कर दिया है।

वैसे विधवा स्त्री का वेष बड़ा ही विरला होता है पर तेरे विधवा वेष पर तो सहस्रों सुरंगे वेष भी न्यौछावर किये जायें तो थोड़े हैं।

विवाह के अवसर पर दुल्हन के लिए बनाये गये कपड़ों को विधवा अपने हाथ से नहीं छूती (क्योंकि यह अशुभ माना जाता है) पर यदि तू अपनी दृष्टि से ही उन्हें स्पर्श करदे तो भारत माता का मस्तक कभी नहीं झुकेगा- क्योंकि उन कपड़ों को पहनने वाली दुल्हनों के पति तेरे पति के समान ही देश के लिये कुर्बान होंगे।

घण मस जाणे उतरियौ,
सो सन रौ सिणगार।
(उण) सांप्रत देस सिंगारियौ,
जस रै जीतणहार।

निपट विरंगौ जगत में,
विधवा हृदौ वेस।
धारीजे इण पर धुड़ा,
सहज सुरंगा वेस।

यरी वेस चढ़ता थका,
विधवा छुव न हाथ।
यू निरखै निज नण सू,
झुकै म भारत माथ।

हे शैतानसिंह की माता ! तू यह मानने की भूल मत करना कि तेरा पुत्र आज इस संसार में नहीं रहा। वह तो देश के लिये कुर्बान होकर अब केवल तेरा ही पुत्र नहीं रहा भारत माता का पुत्र हो गया है।

हे भाई ! तू अपने मन में ऐसा भ्रम पैदा मत होने देना कि तुम्हारा भाई आज नहीं रहा। उसने तो अपने वीर कृत्य से समूचे भारत का विख्यात भ्रातृत्व समुद्रों पार के देशों तक फैला दिया है।

हे पुत्र ! तू आज अपनेआप को पितृहीन मत जानना। तू उस परमवीर का पुत्र है जिसने देश-रक्षा के लिये वीर-गति प्राप्त की है इस पर सदैव गौरव करना।

मावड़ इसौ न मांनजे,
पूत रह्यौ नी म्राज।
भारत मां रौ सुत हुयौ,
थारौ सुत इण काज।

भाई भरम न म्रांणजे,
भ्रात रह्यौ नी म्राज।
उण भारत री भायपी,
राखी समदी पाज।

पत न भ्रांणे भ्रौरतौ,
पिता रह्यौ नी म्राज।
पूत हुयौ इण बाप रौ,
इण पर राखे नाज।

हे धीतानसिंह के स्नेहियो ! तुम अपने मन में यह दुस्तर शंका मत लाना कि हमारा अंतरंग स्नेही धीतानसिंह हमें छोड़ कर चला गया। वह वीर तो आज भारत के सिर का सेहरा और अपने लिये गौरव की वस्तु है।

हे घर ! तू यह शोक मत करना कि तुम्हारा स्वामी आज तुम्हारी सारी सजावट त्याग कर चला गया है। उसने तो आक्रान्ताओं से युद्ध कर भारत के प्रत्येक घर की सजावट और लज्जा की रक्षा की है।

हे बहिन ! तू भी यह मत समझ बैठना कि तुम्हारा प्रिय भाई बिना राखी बँधाये ही स्वर्ग सिधार गया। उस परम वीर की विशाल भुजा तो दीन-दुखी द्वारा बाँधे गये सुरक्षा-सूत्र से शोभा पा रही थी।

सण न सकी मांणजे,
छोड गयो संतान।
भारत रै सिर सेहरो,
मांपा रै उर मांन।

घर मत मांणे ऊरखो,
धणी गयो तज साज।
उण भारथ कर राखली,
घर घर भारथ लाज।

वीर गयो मिन राखरो,
महन हसो मत जांण।
हेम-सुता सांची हुवो,
राखी रासण मांन।

हे शहीद ! अत्यंत स्नेह के साथ तेरा भाई तीज आदि त्यौहारों पर तुझे चूनड़ी ओढ़ाता था आज उसी के यश रूपी रंगों से रंगा हुआ बनकिया (चूनड़ी विशेष) ओढ़ कर धरती नारी-गौरव का अनुभव कर रही है।

इस संसार में तन धन और धरती को जीतने वाले तो कई साहसी पुरुष हुए हैं परन्तु मन पर विजय पाने वाले तो तुम्हारे जैसे विरले ही व्यक्ति हैं।

इस संसार में युगों-युगों से कितने मानव शरीर काल-कवलित हो गये उनका कहीं कोई लेखा-जोखा नहीं। परन्तु जिन वीरों ने देह को नश्वर समझ कर देश के लिए प्राणोत्सर्ग किया है वे सदैव ही अमर हैं।

मोढ़ाई धण नेह सू,
चूनड़ तीज तिवार।
तण जस रंगियौ धणकियौ,
मोढ़े धरणी नार।

जीतै तन जीतै धरा,
जीतै धन रो खांण।
तो जिसड़ा मन जीतणा,
विरळा नर सैतांन।

कितरी नर देहो गई,
जग मैं जांण न म्राज।
देह गिरां माटी जिके,
ग्रमर वतन रे काज।

तेरा प्राण-हंस स्वर्गिक विमान में स्वर्ग को पहुँच गया तब दूसरे विमान में फूलों से लदी हुई तेरी कुसुमवत देह घर को पहुँची।

हे वीर! बाल्यकाल में तु ने तुझे पालने में झुलाया और वर्षा की ठंडी हवा ने तेरे साथ स्नेहमय क्रीड़ायें की। जीवन के अंतिम समय में हिमालय की ठंडी हवाओं ने तुझ पर चँवर डुला कर अपना कर्तव्य पूरा किया।

शादी के समय बड़े शौक से दूल्हे पर चँवर डुलाया जाता है पर तू तो कीर्ति रूपी सुन्दरी का वरण कर के सो रहा है इसलिए स्वर्गिक अप्सरायें अपने नाजुक हाथों से तुझ पर चँवर डुला रही हैं।



जोधपुर हवाई अड्डे पर मेजर शैतानसिंह का शव हवाई जहाज से उतारा जा रहा है।

हंसो सरग सिधावियो,
सरग विमाण उडेह।
फूला लद आई घरे,
फूल सरीसी देह।

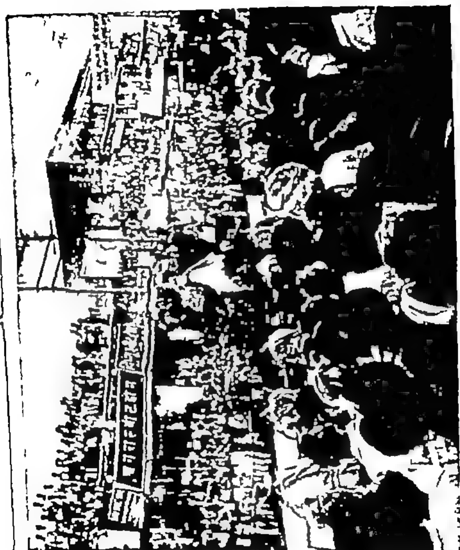
लू लडायी पालणै,
बावळ करी किलोळ।
भंव सबै तन वाहरै,
चवर पवनियो ढोळ।

धंवर धुळ घण घाव सूं,
वर परणती वेळ।
पगो-धर पौढ़ै पथर,
धवर धुळ धर-मेळ।

जोधपुर के पग-पग पर जब तेरी शव यात्रा का जुलूस निकला तो अनन्त उल्लास के साथ शहर की समस्त जनता तुझे श्रद्धांजलि देने के लिए उमड़ पड़ी।

नारी जगत ने पहली बार नई दृष्टि से पुरुष की कीमत को आंका। उन स्त्रियों ने नर रत्न का मूल्य अपनी सीप रूपी पलकों पर थाम कर परखा।

कुंवारी कन्याओं के हृदय में एक वीर आदर्श वर की अज्ञात कल्पना उठी। परिणीता युवतियों ने तेरी पत्नी के गौरवमय संसर्ग का ध्यान किया और वृद्धा माताओं ने सही माने में सपूती होने के आदर्श का अनुभव किया।



सोजती गेट पर श्री सीतारामसिंह को अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिये जनता की भीड़—सैनिक सम्मान के साथ शव ले जाया जा रहा है।



मेजर शैतानसिंह का शव नागोरी गेट से सैनिक अधिकारी अपने कंधों पर उठा कर श्मशान भूमि की ओर ले जा रहे हैं।
बायें से दायें– मेजर दर्शनसिंह कैप्टिन डी एम तनखा कैप्टिन मदनपाल

जोघ नगर मग हालियो ,
जिण दिन सूभ जळूस ।
जावक जनता ऊलटो ,
हियड़ै दूण हळूस ।

नजर नुवेली निरखियो ,
नारी नर री मोल ।
ओस रतन नै ओखियो ,
सीप पलक पर तोल ।

कंवरी उर वर जागियो ,
परणी परणी चीत ।
मात सपूती होण री ,
आणो सांची गीत ।

राष्ट्रपति की ओर से फूलों की श्रंजलि भेंट कर तुम्हें सम्मान दिया गया। मंत्री गए अपने वीर का सम्मान करते हुए मन-मुग्ध से हो गये। अपार जन-समूह का हृदय श्रद्धा से आलोकित हो उठा।

देवताओं के सिर पर चढ़ाए जाने वाले फूल भी हर क्षण मुस्कराते रहते हैं पर हे वीर! तेरे शरीर पर चढ़ाये जाने वाले फूल तो अपना सौभाग्य मान कर मानो प्रफुल्लित हो उठे।

हे वीर! दाह-संस्कार के समय भारतीय सेना की ओर से अत्यंत सम्मानसूचक सलामी जब तुझे दी गई तो तुझ पर चढ़ाये गये फूलों की सुगंध और जन-समूह के निःश्वास से समूचा आकाश आच्छादित हो गया।



मेजर जनरल भगवतीसिंहजी राष्ट्रपति की ओर से मेजर पीताम्बरसिंह को
अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं

देसपती दीघौ फुरब्र ,
फूल मजळी चाढ़ ।
मत्रमुगध मत्री हुया ,
उमगी जन-उर वाढ ।

फूल चढ़ै सिर देव रै ,
तो हो पण कुमळाय ।
तो तन चढ़िया फूलड़ा ,
फूल्या नहीं समाय ।

ग्रत सलामी दी सुभट ,
सेन ग्रण सनमान ।
जन उसांस फूलां सुवास ,
थोछाई ग्रसमान ।

न जाने कितने ही बड़े बड़े व्यक्ति इस जगत की श्मशान भूमि में आ कर सो रहे हैं पर उन सब में इस युग का परमवीर तो एक मात्र तू ही है।

देश रक्षा के लिए युद्ध में रणवीरों की तरह जूझ कर प्राण देने के पश्चात् अपनी मातृ भूमि की गोद में सदा के लिए सो जाने वाले धन्य हैं। प्राण चले जाने पर भी उन वीरों की नश्वर देह परमवीर के समारोह की तरह उल्लास के साथ पूजा व सम्मानित की जाती है।

स्मारक के रूप में बनाई जाने वाली छत्रियें व बड़े से बड़े स्मारक किसी न किसी समय के बाद ढह कर धराशायी हो जाते हैं। पर तेरा स्मारक तो हिमालय स्वयं है वह तभी समाप्त होगा जब संपूर्ण रूप से गल कर बह जायेगा।



राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया फूल चढ़ा कर श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

के टणका नर पोढ़िया ,
कागे हुवो कार ।
पण एकल थूं पौढ़ियो ,
इण जुग रो जूंफार ।

धिन इसड़ो घर पोढ़णो ,
रणधीरां री रीत ।
प्राण गयां तन पूजवै ,
गिणगोरयां री रीत ।

दिन लाग्यां छतरो वहै ,
धड़ा जमी मिळ जाय ।
सूफ पड़ो हिम धोळियो ,
गळियां पूरी थाय ।

जिस मरुधरा में पानी की बड़ी कमी है वहाँ इस प्रकार का अद्भुत बाल (शैतान सिंह) पैदा हुआ जिसकी आशाओं ने हिमालय की चोटियों पर घोर आपत्ति के समय साथा की और इस प्रकार अपनी मातृ भूमि की कोख को उज्ज्वल किया।

हमारे देश का जन-जीवन अगणित त्यौहारों से आलोकित होता रहता है। ये सभी त्यौहार निश्चित समय पर आते हैं और चले जाते हैं। पर बिना किसी पूर्व निश्चित समय के आने वाला सब से बड़ा मरण त्यौहार है जिसमें धरती के सपूत वीर देश की रक्षा के लिए सहर्ष प्राण न्यौछावर करते हैं।

अन्य त्यौहार मना कर तो लोग अपने अपने घरों को लौट जाते हैं पर यह ऐसा अद्भुत त्यौहार है जिसे मनाने के पश्चात् तो देवताओं के संसार में सीधा प्रवेश मिलता है।



दाह-संस्कार के समय बायें से दायें झालावाड़ नरेश हरिश्चन्द्रजी म
श्री बालकृष्ण कौल मंत्री श्री मथुरादास माथुर, मुख्य मंत्री
मोहनलाल सुखाड़िया मेजर जनरल भगवतीसिंहजी महाराजा हरिसिंह
आदि उपस्थित हैं।

जिस मरुधरा में पानी की बड़ी कमी है वहाँ इस प्रकार का अद्भुत वृक्ष (शैतान सिंह) पैदा हुआ जिसकी शाखाओं ने हिमालय की चोटियों पर घोर आपत्ति के समय छाया की और इस प्रकार अपनी मातृ भूमि की कोख को उज्ज्वल किया।

हमारे देश का जन-जीवन अपरिमित त्यौहारों से सम्मोहित होता रहता है। ये सभी त्यौहार निश्चित समय पर आते हैं और चले जाते हैं। पर बिना किसी पूर्व निश्चित समय के आने वाला सब से बड़ा मरण त्यौहार है जिसमें धरती के सपूत वीर देश की रक्षा के लिए सहर्ष प्राण न्यौछावर करते हैं।

अन्य त्यौहार मना कर तो लोग अपने अपने घरों को लौट आते हैं पर यह ऐसा अद्भुत त्यौहार है जिसे मनाने के पश्चात् तो देवताओं के संसार में सीधा प्रवेश मिलता है।



दाह-संस्कार के समय बायें से दायें झालावाड़ नरेश हरिश्चन्द्रजी श्री बालकृष्ण कौल मंत्री श्री मथुरादास माथुर, मुख्य मंत्री मोहनलाल सुखाड़िया मेजर जनरल भगवतीसिंहजी महाराजा हरीसिं आदि उपस्थित हैं।

जिस मरुधरा में पानी की बड़ी कमी है वहां इस प्रकार का अद्भुत वृक्ष (शैतान सिंह) पैदा हुआ जिसकी शाखाओं ने हिमालय की चोटियों पर घोर आपत्ति के समय छाया की और इस प्रकार अपनी मातृ भूमि की कोख को उज्ज्वल किया।

हमारे देश का जन-जीवन अगणित त्यौहारों से उल्लसित होता रहता है। ये सभी त्यौहार निश्चित समय पर आते हैं और चले जाते हैं। पर बिना किसी पूर्व निश्चित समय के आने वाला सब से बड़ा मरण त्यौहार है जिसमें धरती के सपूत वीर देश की रक्षा के लिए सहर्ष प्राण न्यौछावर करते हैं।

अन्य त्यौहार मना कर तो लोग अपने अपने घरों को लौट आते हैं पर यह ऐसा अद्भुत त्यौहार है जिसे मनाने के पश्चात् तो देवताओं के संसार में सीधा प्रवेश मिलता है।

धारा तीरथ में धठ,
धसियौ धूं संतान।
उण गिर तीरथ सूं वहो,
गग दूणो पुन जाण।

गिर वह गगा सरसती,
जमना तीरथ थाय।
सो सगम संतान रो,
कीरत - धम कहाय।

रण-किलोळ जमना हियै,
गग सरग सोपान।
सरसत लहरां पवन पिण,
बांचै सुजस जिहांन।

हे शैतानसिंह ! जिस स्थान पर तू युद्ध रूपी तीर्थ में प्रविष्ट हुआ था उस पुण्य हिम तीर्थ से बहने वाली पावन-गंगा का पुण्य अब द्विगुणित हो गया है।

उसी पुण्य गिरिराज से बहने वाली गंगा सरस्वती और यमुना जिस संगम-स्थल पर मिलती है वह स्थल शैतानसिंह का कीर्ति-स्तम्भ है।

अभी तक यमुना की कल-कल ध्वनि में युद्ध की आवाज प्रतिध्वनित हो रही है। मुक्तिदायिनी गंगा की स्वर्गिक पावनता उसमें सुरक्षित है और सरस्वती की लहरें तेरे बलिदान की यशमयी गाथा गा रही है।

धारा तीरथ में जठ,
धसियौ थूं सैतांन ।
उण गिर तीरथ सूं बही,
गग दूणौ पुन आंण ।

गिर बह गगा सरसती,
जमना तीरथ थाय ।
सो सगम सैतान रो,
कीरत - धम कहाय ।

रण किसोळ जमना हिय,
गग सरग सोपांन ।
सरसत लहरां पवन पिण ।
धोवै सुजस जिहांन ।

हे शैतानसिंह ! जिस स्थान पर तू युद्ध रूपी तीर्थ में प्रविष्ट हुआ था उस पुण्य हिम तीर्थ से बहने वाली पावन-गंगा का पुण्य धाम विभूषित हो गया है।

उसी पुण्य गिरिराज से बहने वाली गंगा सरस्वती और यमुना जिस संगम-स्थल पर मिलती है वह स्थल शैतानसिंह का कीर्ति-स्तम्भ है।

अभी तक यमुना की कल-कल ध्वनि में युद्ध की आवाज प्रतिध्वनित हो रही है। मुक्तिदायिनी गंगा की स्वर्गिक पावनता उसमें सुरक्षित है और सरस्वती की लहरें तेरे बलिदान की यशमयी गाथा गा रही है।

धारा तीरथ में जठै,
धसियौ थूं संग्राम।
त्रण गिर तीरथ सूं बत्तो,
गंग दूणौ पुन जांण।

गिर यह गंगा सरसती,
जमना तीरथ थाय।
सो संगम सतांन रौ,
कीरत - थंभ कहाय।

रण किल्लोळ जमना हिये,
गंग सरग सोपांन।
सरसत लहरां पवन पिण।
सोंधै सुजस जिहांन।

इन तीनों नदियों का नीर तेरे बलिदान का सन्देश लेकर समुद्र में समाहित होता रहता है जिससे समुद्र से उत्पन्न चंद्रमा के वंशज (चंद्रवंशी शैतानसिंह) का गौरव मय बलिदान उसके हृदय में सहर्ष हिलोरें लेने लगता है।

जब तक समुद्र में इन नदियों के पानी के आने के साथ-साथ लहरें उठती रहेंगी तब तक वह सुन्दर रत्नाकर उस नर रत्न की गौरवमयी गाथा को गाते हुए कभी नहीं थकेगा।

हे शैतानसिंह ! जब तू जीवित था तो हम थोड़े से परिचित व्यक्ति ही तुझे जानते थे। पर तूने देश के लिए लड़ते हुए असाधारण मृत्यु प्राप्त कर समूचे संसार में अद्वितीय नाम कमाया है।



कामा में दाह-संस्कार के समय परमवीर के अंतिम दर्शनों के लिये उपस्थित जनता।

तीनूं नद रौ नीर बह,
नित ही सागर जाय।
सागर सुत रैं वस रौ,
हेत हियै लहराय।

जद लग सागर लहरसी,
नदिया नीर प्रमांण।
रतनाकर रळियावणो,
थकै न करत वखांण।

जीवमुक्तां म्हे जांणता,
विरळा थारो नांम।
पण पा विरळी मौतड़ी,
कीधो विरळो नांम।

स्फटिक धवल दर्पण में मुख देखने के बाद पूर्व में उगने वाला चंद्रमा आकाश में ऊंचा चढ़ता ही जाता है फिर भला चंद्रवंशी प्रीतमसिंह ऐसी दर्पण में मुख देखने के पश्चात अपने दृढ़ संकल्प को कैसे त्याग सकता है।

चंद्रमा तो आकाश के मध्य में पहुँचने के बाद फिर अस्ताचल की ओर ढलने लगता है परन्तु तू तो कीर्ति के आकाश के मध्य में दोनों ही पक्षों में सदा के लिये शोभा देता रहेगा।

मैंने काश्मीर-वासिनी सरस्वती को प्रसन्न करने के लिये उसके वाहन हंसों को अपने मन के मोती दिये। उसकी वीणा को अपनी आत्मा में बसी देश प्रेम की झंकार से झंकृत किया और मानसरोवर के लाल कमलों पर अपने रक्त का लाल रंग चढ़ा कर उन्हें और भी गहरे मजीष्ठ रंग का बना दिया।

हिम दरपण मुख देखिया ,
चद चढै असमान ।
तिण दरपण मुख देखियां ,
हटे न हठ सैतान ।

चदो चढ नीचो ढळ ,
(थू) नित ऊँचो असमान ।
कीरत हदे गयण में ,
दुहु पख एक समान ।

हर्सा दे मोती सुयस ,
आतम सार अकार ।
कथळ ममोठा थें किया ,
कसमीरी उपहार ।

यह जान कर तो अत्यन्त दुःख होता है कि तू सदा के लिये इस संसार से विदा हो गया पर दूसरे ही क्षण वीरता और अदम्य साहस के साथ जूझने की बात जब सामने आती है तो मन गर्वित हो उठता है। इस प्रकार की भाव-भूमि में हे शैतानसिंह ! हृदय की आँखों की पलकों से तेरे चेहरे की झलक कभी दूर नहीं होती !

हे शैतानसिंह ! सभी सज्जनों में श्रेष्ठ और शूरवीरों का तू सिरमौर था। दुश्मनों के लिये तू वास्तव में शैतान था पर अपने साथियों का बहुत बड़ा सहारा था।

सरल व्यक्तित्व सरल स्वभाव और सरल जीवन। वास्तव में तू सरलता की साक्षात प्रतिमूर्ति था। पर युद्ध में हे रण-बाँकुरे, तूने दुश्मनों के रक्त से महान हिम क्षेत्र को आप्लावित कर दिया।

मरियो सस दुख ऊपजै,
जूझ्यो सुण सनमान।
उर धांस्यां री पलक सूं,
मिटै न झळक सैतान।

सजनां सिरै सैतान सी,
थू सूरां सिर मोड।
मरियां हित सैतान हो,
सैणां मोटी ठोड।

सादो मन सादी ससा,
सादो थारो वेस।
पण मांका रणवीर थें,
रळतळियो हिम-देस।

परमवीर

इस पवित्र धरती और धर्म के लिये अनेकों योद्धा लड़े हैं और भविष्य में भी लड़ेंगे पर मानसरोवर के किनारे ऐसे दुर्गम-स्थल में पहुँच कर तो तुम्हारी तरह विरले ही रक्त बहायेंगे ।

युग बदलने पर समय के साथ पुरुषों में और उनकी जीवन-मान्यताओं में भी अंतर आता है पर मानसरोवर के हंस तो अपनी विशेषताएँ कभी नहीं छोड़ते । अत तुम्हारे जैसे सत्-पुरुषों में अपनी मूल विशेषताएँ बनी रहती हैं ।

किसी को कितना ही कीमती हीरा क्यों न मिले उचित दाम पर वह जौहरी के हाथों बेच दिया जाता है परन्तु तू तो मरुधर का अमूल्य हीरा है जिसे भारत माता के मुकुट में स्थान मिला है ।

लड़िया अर लड़सी घणा,
धरा धरम र काज।
विरळा रगत बहावसी,
पाबासर री पाज।

जुग पलटयां पलटै पुरख,
पलटै जीवण कांण।
पण पाबासर हसला,
तजै न अपणी आंण।

हीरो जे हाथां लगै,
जोहरी हाथ बिकाय।
तू हीरो मुरधर तणो,
भारत मुकट सुहाय।

आज राणा प्रताप राठौड़ पृथ्वीराज वीरमदे सोनिगरा शिवाजी और हम्मीर चौहान की स्वर्गीय आत्मायें भी यह देख कर गौरव का अनुभव कर रही हैं कि इस युग में भी राठौड़ दुर्गादास की भूमि में शैतानसिंह जैसे वीर पैदा होते हैं।

उत्तर दिशा की ओर से भारत की रक्षा करने वाले तेरे पूर्वजों का दुर्ग जैसलमेर आज मन ही मन गर्वित हो रहा है क्योंकि तूने चीनियों से भिड़ कर कैलाश पर्वत की रक्षा की और इस प्रकार अपने पूर्वजों की परम्परा का निर्वाह किया।

महाकवि ईसरदास और दुरसा आढ़ा जैसे स्वर्गीय कवि आज तेरी कीर्ति का वर्णन करने के लिये आतुर हो उठे हैं। हुकमीचंद सिढ़िया और सूरजमल मिश्रण जैसे महाकवि तो पुनः इस धरती पर अवतरित होने के इच्छुक हो उठे हैं क्योंकि तुमने अपने बलिदान से राजस्थान की गौरव-गाथाओं को नया जीवन दिया है।

धिन दुरगो रै देसड़,
इण जुग इसड़ो वीर।
पातल पीथल अजसी,
वीरम शिवा हमीर।

अजसी गढ़ जैसांण री,
उसर भड़ कींवाड़।
लो भिड़ियां दळ चोण रा,
सक्या न सिव-गढ़ पाड़।

ईसर पुरसो आसता,
कथण तिहारी कीत।
हुकमो सूरजमल करे,
घर सूं पाछी प्रीत।

आज भारत भूमि और उसके निवासी तुम्हारे जैसे सपूतों पर गर्व कर रहे हैं। इतना ही नहीं अतीत का इतिहास अपने को फिर गौरवान्वित अनुभव करता है। तुम्हारे इस बलिदान की गाथा का भावी पीढ़ियां भी हर क्षण की साक्षी के साथ स्मरण कर गर्वित होंगी।

समय का चक्र जिस प्रकार चलता रहा है चलता रहेगा और समय गुजरता रहेगा जब तक यह धरती रहेगी इस पर कई घर बनेंगे और बिगड़ेंगे पर इस संसार में उन लोगों का नाम कभी नहीं भुलाया जायेगा जिन्होंने देश के लिये असाधारण कार्य किये हैं।

जो धरती हमारी जन्म भूमि है और जिसके अन्न व जल से हम पाले-पोसे गये हैं, उसकी रक्षा के लिए अंतिम श्वास तक जो वीर संघर्ष करते हैं उन्हें धन्य है।

अजसे घर म्हे अंजसां
अजसे सह इतिहास ।
अजससी सह पीढ़ियां ,
प्राची तणे प्रकास ।

दिन बीत्या ज्यूं बीतसी ,
घर बिसरै के धांम ।
भव सोभा भूलै नहीं ,
कीधा नर जे कांम ।

जिण धरती में जलम ले ,
अन जळ पोख्या अंग
घड़ ऊभां धर ना दिये
यां पुरसां न रग

परिशिष्ट

१ मेजर शैतानसिंह का अन्तिम पत्र।

२ प्रधान मंत्री का लोक सभा में वक्तव्य।

३ सैनिक अधिकारियों के महत्त्वपूर्ण पत्र।

४ प्रतिरक्षा मंत्री, मुख्य मंत्री आदि के वक्तव्य।

The last letter of Major Shaitan Singh to his brother in-law

13th Nov 62

My dear Kr Mool Singhji Sahib

How fortunate I am to receive your most affectionate letter only yesterday

I may assure you that I am in best of my health and in wounderfully high spirits.

I am where you think me to be, I may assure you I am really proud and happy to be here. We are all happy and there is no cause of any anxiety

I once again thank you very much for your most affectionate letter and I would again like to assure you that I am most happy and healthy and in wonderfully high Spirits

With kindest regards.

Yours sincerely
SHAITAN SINGH

Prime Minister Mr Nehru s Statement
in Parliament on 20th November 1962

In Ladakh the Chushul airstrip suffered further damage from renewed enemy shelling yesterday Defence official could not say whether it was still serviceable.

The story of a field commander's courage and dedication has come to light in a detailed account of the Nov 18 fighting at the Indian post a Rezang la 15 miles south east of Chushul.

Maj Shaitan Singh commanding the post was being carried to safety by two jawans after being seriously wounded when the group came under heavy fire

Maj Singh ordered the jawans to leave him where he was and take cover

Extract taken from Hindustan Times dated 22 11-62

D.O. No. F3/1/63/D (cer)
New Delhi
25th January 1963

Seal
DEFENCE SECRETARY

Dear Madam

I have great pleasure in communicating to you the award by the President of **Param Vir Chakra** in recognition of the most conspicuous gallantry displayed by Major Shaitan Singh on 18th November 1962 in Ladakh Please accept the warmest congratulations of the Ministry of Defence on this great distinction conferred on your husband for his immortal valour I do hope that Major Shaitan Singh, who is now missing and is believed to be a prisoner of War will soon be able to join you and enjoy the distinction conferred on him.

Yours sincerely
Sd P V R RAO

Citation in respect of Major SHAITAN SINGH (IC-6400) Kumaon Regiment (Posthumous)

Major Shaitan Singh was commanding a Company of an Infantry Battalion deployed at Rezangala in the Chushul Sector at a height of about 17 000 feet The locality was isolated from the main defended Sector and consisted of 5 defended platoon positions. On 18th November 1962, the Chinese forces subjected the Company position to heavy artillery mortar and small arms fire and attacked in over whelming strength and in several successive waves Against heavy odds, our troops beat back successive waves of enemy attack. During the action Major Shaitan Singh dominated the scene of operations and moved at great personal risk from one platoon post to another sustaining the morale of his hard pressed platoon posts. While doing so he was seriously wounded but continued to encourage and lead his men who following his brave example, fought gallantly and inflicted heavy casualties on the enemy For every man lost by us, the enemy lost 4 or 5 When Major Shaitan Singh fell disabled by wounds in his arms and abdomen his men tried to evacuate him but came under heavy machine gun fire Major Shaitan Singh then ordered his men to leave him to his fate in order to save their lives.

Major Shaitan Singh's supreme courage leadership and exemplary devotion to duty inspired his Company to fight gallantly almost to the last man

Sd. P V R Rao
Secretary to the Government of India

Seal
General J N. CHAUDHURI

D.O No. 70017/13IC/COAS
CHIEF OF THE ARMY STAFF
ARMY HEADQUARTERS
NEW DELHI.
14th February 1963

Dear Shrimatiji,

I write to express the deep sympathy and condolence of myself and all ranks in the Army on the sad and untimely death of your husband, Major Shaitan Singh Your husband fought gallantly and made the supreme sacrifice for the sake of the Motherland—a noble death for any soldier

I hope you will bear this loss with courage and fortitude with the knowledge that we share your sorrow

Yours sincerely
Sd. J N CHAUDHURI

Seal
Gen J N CHAUDHURI

D.O No. 31286/4/MS (X)
CHIEF OF THE ARMY STAFF
ARMY HEADQUARTERS
NEW DELHI
31st J n. 63

Dear Mrs Sugan Kanwari

It is with great pleasure that I send you my heartiest congratulations on the well merited award of **Param Vir Chakra** conferred on your husband Major Shaitan Singh (IC-6400) Kumaon and express my deep appreciation of the act of valour and most conspicuous bravery performed by him in Ladakh in November 1962

Yours sincerely
Sd J N CHAUDHURY

Lt Gen K. BAHADUR SINGH
Colonel of the KUMAON REGIMENT

D.O 10/Cas/KBS/NDC
THE KUMAON REGIMENT
NEW DELHI
31st Jan. 63

Dear Shrimati Shaitan Singhji,

I was extremely delighted to read in the paper of the rare distinction conferred on your husband Major Shaitan Singhji in recognition of his great qualities of leadership and the most conspicuous bravery shown by him in the service of the nation Both the Kumaon Regiment as well as the citizen of Rajasthan from where I also come, are immensely proud at this supreme award of gallantry which will always serve as an inspiration to others.

It is a well deserved award and I am personally delighted. May I offer you my heartfelt congratulations on this occasion I only hope that we will have in the near future a more positive and heartening news of Major Shaitan Singh who is at present reported wounded/believed missing

Yours sincerely
Sd. BAHADUR SINGH

Lt. General BIKRAM SINGH
General Officer Commanding

Headquarters XV Corps,
C/o 56 APO
12th Mar. [illegible]

My dear Shri Surajbhan Singhji,

Thank you very much for your letter dated 20th February 1963 I am very sorry that due to my being constantly away on tour I could not reply to it earlier

I am very grateful to you for what you have said about me and I much value the sentiments you have expressed.

I am really proud that I had officer like late Maj. Shaitan Singh under my command both here and in Naga Hills. I had the highest regard for him ever since I came in close touch with him and there was no doubt in my mind that he had all the qualities of a perfect gentleman and a brave soldier and that one day he was sure to make a name for himself and his family Though Major Shaitan Singh is no more in this world but he has made himself immortal by his supreme sacrifice for the cause of our motherland. Needless to say that the future progeny will always remember with reverence people like Major Shaitan Singh who never hesitated to pay the highest price in keeping the hard won freedom of the country I would like to congratulate you and the family for producing such an outstanding soldier It is not only

the Army but the whole country is indebted to him It is not necessary for me to say anything further There are the words and there are the deeds and by his action Major Shaitan Singh has certainly become a martyr

I am very keen to come and pay a visit to you all at Jodhpur I shall certainly do so when I get an opportunity

With best wishes to you all

Yours sincerely
Sd BIKRAM SINGH

Lt. Col. H. S. DHINGARA
Commanding Officer.

D. O. No. 376/C
13 BATTALION
THE KUMAON REGIMENT
२९ मार्च १९६३

मेजर शैतानसिंह की असाधारण वीरता साहस एवं कुशल नेतृत्वता पर भारत सरकार ने जो उनको 'परम वीर चक्र' (मरणोपरान्त) प्रदान किया है, इस उपलक्ष पर मैं और मेरी पलटन के सब ऑफिसर, जे सी ओ और जवान आपको हार्दिक बधाई देते हैं।

उनके इस कार्य ने हमारी पलटन की प्रतिष्ठा ही नहीं बढ़ाई, अपितु पूर्ण सेना तथा देश का गौरव एवं मान और भी ऊंचा किया है। आने वाली पीढ़ियों के लिए यह एक आदर्शपूर्ण उदाहरण रहेगा।

Sd. एच एस ढींगरा

Smt. Sugan Kunwari
Village—Banasar
P.O PHALODHI (Raj.)

शैतानसिंह सारे देश के प्रतीक

शैतानसिंह राजस्थान के ही नहीं हिन्दुस्तान के प्रतीक हैं। उनका बलिदान सदैव प्रेरणादायक रहेगा। जिसका दिल मजबूत है वही बंदूक चला सकता है। कमजोर व्यक्ति के हाथ में हथियार नहीं रह सकते और वह कायरता से अपने आप को ही नुकसान पहुंचा सकता है।

लोकवाणी दैनिक
जयपुर, 11 जनवरी 63

यशवन्तराव बलवन्तराव चव्हाण
रक्षा-मन्त्री, भारत सरकार

× ×

राजस्थान के शैतानसिंह ने जिस वीरता का प्रदर्शन किया है उसकी गुण गाथा प्रत्येक के मुख से सुनने को मिलती है। वे लद्दाख के एक ऐतिहासिक व्यक्ति बन गए हैं। उनके हाथ में गोली लग जाने के बाद भी वे लड़ते रहे। वे तभी गिरे जब कि उनके पेट में गोली लगी। उनकी वीरता से प्रेरित होकर उनकी टुकड़ी के और जवान भी अपनी जान हथेली पर लेकर लड़े। उनकी टुकड़ी में से कुछ दो तीन व्यक्ति वापिस लौटे, बाकी सब को वीरगति प्राप्त हुई। शैतानसिंह ने पीछे हटने से इन्कार कर दिया और इच्छा प्रकट की कि उन्हें रण-स्थल में ही वीरगति प्राप्त होने दी जाय। इस गौरवपूर्ण वीरता से राजस्थान का नाम उज्ज्वल हुआ है।

मोहनलाल सुखाड़िया
मुख्य मन्त्री, राजस्थान

जो लोग अब तक मातृ-भूमि की रक्षा के लिए सिर कटाते आये हैं उनको फिर मातृ-भूमि की रक्षा के लिये आगे आना चाहिए। यही तो एक अच्छा मौका है जब ऐसे बहादुर लोगों के गुणों और विशेषताओं की परीक्षा होगी। शैतानसिंह पर किसे गर्व नहीं? मेजर शैतानसिंह ने राज-स्थान और राजपूत जाति का नाम वीरता के इतिहास में बहुत ऊँचा किया है। मुझे शैतानसिंह जैसे वीरों पर गर्व है।

लेफ्टीनेण्ट जनरल महाराजा सवाई मानसिंह,
जयपुर

× ×

परमवीर शैतानसिंह हमारे लिये प्रेरणा के स्रोत हैं उन्होंने जो कुछ किया है आने वाली पीढ़ियाँ उससे सबक लेती रहेंगी।

महारावल हरिवल्लभ
निर्माण मंत्री राजस्थान सरकार

× ×

मेजर शैतानसिंह ने लद्दाख के मोर्चे पर अद्वितीय बहादुरी का परिचय देकर भारत के सामने एक बहुत बड़ा उदाहरण प्रस्तुत किया है। श्री शैतानसिंह की हिम्मत और बहादुरी के कारण ही हम चुशूल शहर व वहाँ की हवाई पट्टी को बचाने में कामयाब हुए। मेजर शैतानसिंह का नाम भारत के इतिहास में अमर रहेगा।

महारावल लक्ष्मणसिंह डूंगरपुर
प्रतिपक्षी दल के नेता राजस्थान विधान सभा, जयपुर

राजस्थान राज्य सरकार मेजर शैतानसिंह के पराक्रम का आदर करती है। चुशुल के निकट हुए युद्ध में आपने जो पराक्रम और वीरता दिखाई उसकी हम सराहना करते हैं। उन्होंने इस प्रकार का वीरता का मार्ग प्रशस्त किया है जिसके लिए राजस्थान प्रसिद्ध है।

मेजर शैतानसिंह के पिता ठाकुर हेमसिंह ने भी जो अब नहीं रहे हैं पहले महायुद्ध में असाधारण वीरता दिखाई थी। इसके लिए जोधपुर रियासत व ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कई पदक और ओ बी ई की पदवी दी थी।

मथुरादास माथुर
गृह मन्त्री राजस्थान

× ×

३८ वर्ष की आयु के मेजर शैतानसिंह ने वीरगति प्राप्त की। अपने शौर्य की गाथाओं से राष्ट्र को अनुप्राणित किया। उसकी शक्ति को उभार और नौजवानों को ओज दिया। परमवीर शैतानसिंह के सम्मान ने राजस्थान के शौर्य को प्रतिष्ठा प्रदान की।

निरंजननाथ आचार्य
उप शिक्षा मन्त्री राजस्थान

× ×

जब मैंने शैतानसिंह को एक फुटबॉल के खिलाड़ी के रूप में सर्वप्रथम देखा तब उसी दिन अनुमान लगा लिया कि यह लड़का होनहार है। मैंने उससे पूछा कि तुम क्या धंधा करना चाहते हो? तो उसने उत्तर दिया कि मैं वकील होना चाहता हूँ। मैंने उससे वकील न बन कर सेना में आने के लिए कहा और वह मान गया। तब मैंने उसे अपनी यूनिट दुर्गा होर्स में एक केडेट के पद पर भर्ती कर लिया। उसी दिन से उसका सैनिक जीवन शुरू हुआ था।

अब तक मैं अपने को उसका सी.ओ. समझता आया हूँ किन्तु २८ जनवरी से हमारा रिश्ता बदल गया है। अब शैतानसिंह मेरा सी ओ और मैं उसका

कर्नल मोहनसिंह भाटी जोधपुर

परमवीर